International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 07-12-2020; Accepted: 22-12-2020; Published: 08-01-2021
www.hindijournal.com
Volume 7; Issue 1; 2021; Page No. 01-02

सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को सहेजती समकालीन रूसी कविता

Saurabh Naik
Assistant Professor (Guest) in Russian, Department of Slavonic and Finno-Ugrian Studies, Delhi University, India

सारांश

कविता एक संवेदनशील विधा है। समकालीन कविता समकालीन समाज की सभी संवेदनाओं को प्रकट करती है। इस लेख में हम रूसी समकालीन कवि संझार यनिषेव की कुछ कविताओं का विश्लेषण करेंगे और जानेंगे कि किस प्रकार समकालीन रूसी कवि सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को परिभाषित करते हैं। सोवियत संघ के विघटन के पश्चात रूस में कई सामजिक, सांस्कृतिक] राजनितिक और आर्थिक परिवर्तन हुए, जिनका प्रभाव एक आम आदमी के जीवन पर भी पड़ा है। इन्ही परिवर्तनों को दर्शाती समकालीन रूसी कविता कई प्रश्न उठाती है और हमें जीवन जीने का एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है। यह लेख से हमें रूसी संस्कृति और साहित्य के नज़दीक ले जाता है और तुलनात्मक दृष्टिकोण प्रदान आत्मावलोकन करने को विवश करता है। इस लेख में लेखक ने रूसी कविताओं को हिंदी रूपांतरण भी प्रस्तुत किया है

मूलशब्द: समकालीन कविता, रूसी कविता, सामजिक, सांस्कृतिक, संझार यनिषेव, अनुवाद, संस्कृति

प्रस्तावना

समकालीन कविता से आशय है गत 30 वर्षों में लिखी गयी कवितायें। 1990 में सोवियत संघ के विघटन के बाद जन्मी समकालीन रूसी कविता में कई नयी धाराएं और नए विचार सम्मलित हुए हैं। पिछले 30 वर्षों में वैश्वीकरण, बाज़ारवाद और नयी अर्थशास्त्रीय संरचनाओं का प्रभाव सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों पर पड़ा है। यह वो समय है, जब सांस्कृतिक मूल्यों की नयी परिभाषाएं गढ़ी गयीं और उन्हें नए रूप में परिभाषित भी किया गया। यही बदलाव कविता में भी दिखे। राजेश जोशी लिखते हैं, "शिल्प और भाषा में पुरानेपन के साथ एक नई अंतर्वस्तु लेकर की गई रचना समकालीन नहीं बन सकती । समकालीनता निजी काव्य मुहावरा नहीं है हजसे एक बार साधकर हमेशा के लिए काम चलाया जा सके । वस्तुतः हर महत्वपूर्ण रचना अपनी समकालीनता को अर्जित करने की एक सतत् प्रक्रिया है और प्राविधि भी। समकालीनता अर्जित करना और करते रहना, एक सतत प्रक्रिया है। अगर यह प्रक्रिया किसी रचनाकार में रुक जाती है या रचनाकार ही उसके प्रति उदासीन हो जाता है तो बहुत संभव है कि अपने समय में सबसे अधिक समकालीन रहा रचनाकार, रचनारत रहते हुए भी देखते-ही-देखते अपनी अगली पीढ़ी के रचनाकारों के लिए और रचना परिदृश्य के लिए समकालीन न रह जाए"। समकालीन कविता आज के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रवाह की कविता है। समकालीन रूसी कविता में ये सभी विशेहताएँ देखी जा सकती हैं।

इस लेख में हम समकालीन रूसी कवि संझार यनिषेव की कविताओं का विश्लेषण करेंगे। संझार यनिषेव अन्य पारम्परिक रूसी कवियों से अलग है, उनकी कविताओं में एक कहानी होती है, या यूँ कहें कि वे कहानी को कविता में पिरोते हैं। उनकी कवितायें समाज की विषमताओं को बताती भी हैं और उनसे निजात पाने का रास्ता भी बताती हैं। संझार यनिषेव एक सकारात्मक कवि है, वे अपनी रचनाओं से समाज में नयी उम्मीद का संचार करते हैं।

उनकी अधिकतर कवितायें सामाजिक सांस्कृतक पृष्टभूमि पर लिखी गयी कवितायें हैं। ऐसी ही एक कविता है, जिसमे वे नयी पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के आदर्श संबंधों की व्याख्या करते हैं, और बताते हैं कि कैसे एक आदर्श समाज की स्थापना की जा सकती है। कैसे आपसी समझ और सहयोग से हम अपने आज को और बेहतर बना सकते हैं। वे लिखते हैं

(कविता के कुछ अंश)

दाहिने हाथ में माउस को पकड़िए,
उँगलियों से बटन को दबाइये यानी क्लिक कीजिये
और व्हील को घुमाइए।
हाँ बटनों को कई बार दबाने में परेशानी नहीं,
बस एक ही बार में दो बटन नहीं दबाइये।
आपने मेलबॉक्स तक माउस ले जाना सीख लिया।
फिर से प्रयास करते हैं ।
पता है कि माउस का एक क्लिक-जीवन का एक
अतिरिक्त पल है।
चलिए अब हम लिखते हैं.

पापा घबराइए नहीं
आप आसानी से कर सकते हैं

इस कविता में हम देख सकते हैं कि कवि न सिर्फ अपने बुज़ुर्गों का सम्मान करता है बल्कि हर वो संभव प्रयास करता है जिससे दोनों पीढ़ियों में सामंजस्य बने और दोनों मिल कर जीवन में आगे बढ़ें। कविता में संझार यनिषेव दर्शाते हैं, कि कैसे एक पुत्र अपने पिता को आज की दुनिया में ले जाता हैं। कम्प्यूटर और इंफोमशन टेक्नोलॉजी आज की ज़रुरत है। कवि लिखता है कि "कि माउस का एक क्लिक-जीवन का एक अतिरिक्त पल है।" अक्सर हम पुरानी पीढ़ी को इस समस्या से जोहते हुए पाते हैं, पर जब बात नयी पीढ़ी की आती है, तो उन्हें ये सभी चीज़ें बेहद सहज लगती हैं। समय के बदलाव और नयी चीज़ों को अपनाने और समझने में उम्र एक अहम् भूमिका निभाती है। इसलिए इसमें पुरानी पीढ़ी को नयी पीढ़ी का सहयोग चाहिए और साथ ही साथ नयी पीढ़ी को अपने बुज़ुर्गों का अनुभव चाहिए। आज की पेचीदा ज़िन्दगी में ये बहुत ज़रूरी है, इसलिए सामंजस्य और आपसी सद्भाव से ही हम समाज में नयी अवधारणा पेश कर सकते हैं।

अपनी एक और कविता में संझार यनिषेव हमारा ध्यान एक और सांस्कृतिक समस्या की ओर ले जाते हैं। वे कविता में अन्न को बर्बाद न करने और थाली में खाने को न छोड़ने पर ज़ोर देते हैं। कवि, जिसने एक लंबा इतिहास देखा है, जिसमे युद्ध का समय भी शामिल है, वह इस बात को भलीभांति जानता है कि अन्न का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है और हमें किस प्रकार इसका सदुपयोग करना चाहिए। अपनी कविता में कवि लिखता है -

हम द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पीढ़ी हैं,
और हम यूँही खाने को बर्बाद नहीं करते,
हम इसकी अहमियत जानते हैं

कवि लिखता है, कि दूसरे भूखे लोगों को देखकर क्या तुम्हें दया नहीं आती। जितना खाना तुम्हारी थाली में बचा है, वो किसी और का पेट भरने के लिए पर्याप्त है। ये उदाहरण न सिर्फ रूस में बल्कि भारत में भी प्रासंगिक हैं। ये उदाहरण हमें रूसी समकालीन रूसी कविता में मिलते हैं। अपनी एक और कविता में कवि संझार यनिषेव लिखते हैं कि कैसे एक अच्छी परवरिश एक अच्छे भविष्य की नींव साबित होती हैं। और किस प्रकार माता-पिता बच्चों का जीवन बना भी सकते हैं और बिगाड़ भी सकते हैं। कविता में वो दो मित्रों के उदाहरण से हमें इस विषय पर सोचने को विवश करते हैं।

तुम सड़क के उस पार रहते थे,
मैं रहीम और तुम रहमान ।
हम एक ही तो थे।
फर्क बस इतना था, कि तुम आलीशान घर में रहते थे,
और मैं एक मामूली घर में।
क्या नहीं था तुम्हारे पास महंगे विदेशी खिलोने और कपडे
कितना अच्छा था तुम्हारा जीवन पर आज तुम्हारी इस
हालत के ज़िम्मेदार भी यही खिलोने हैं शायद, जो अब
बिलकुल मौन खड़े हैं, ज़रा आवाज़ भी नहीं करते।

चीज़ों की परख और उनका मूल्य अक्सर वही समझ पाते हैं, जिन्हे उन्हें पाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। आसानी से मिली हुई वस्तुओं का कोई मोल नहीं होता, न ही हम उनकी अहमियत को समझ पाते हैं। इसी तरह बालपन में सभी इच्छाओं की पूर्ती कभी कभी हमें कमज़ोर बना देती है और हम मेहनत करना भूल जाते हैं। परवरिश हमारे जीवन की एक अहम कड़ी है, जिसे बेहद सतर्कता से समझदारी से निभाना चाहिए। ये सभी कवितायें, आज के परिदृश्य में लिखी गयी कवितायें हैं। इन कविताओं से इतना तो स्पष्ट है, कि सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य कमोवेष एक ही हैं, फिर चाहे रूस हो या भारत। इन कविताओं में लिखे गए विचार हमारे समाज के लिए भी उतने ही आवश्यक हैं। रूस और भारत में कई समानताएं देखी जा सकती हैं उदाहरण के लिए रूसी और संस्कृत की व्याकरण संरचना में अधिक अंतर नहीं है और यही समानता संस्कृत और रूसी शब्दों में भी देखी जा सकती है। उनके विचार, उनकी संस्कृति हमारे बेहद नज़दीक है, शायद यही कारण है, कि रूस हमारा सबसे अच्छा मित्र है।

संदर्भ सूची

1. Rajesh Joshi. Ek Kavi Ki Notebook / Rajkamal Prakashan, India, 2014.
2. Sanjar Yanyshev UMR New King of Appeals, Art House Media, Moscow, 2017.
3. Awasthi Devishankar, Aalochana Aur Aalochana, Vaani Prakashan, India, 1995.
4. Pachauri Sudhish, Uttar Adhunik Sahityik Vimarsh, Vaani Prakashan, India, 1996.